'राजभक्ति बनाम राष्ट्रभक्ति भारतेन्दु और नर्मद दे : सन्दर्भ में'

*डॉ. यशस्पति झा

कादरी साहित्य के इतिहास में माना जाता है। यह परिवर्तन भारतीय इतिहास के हर क्षेत्र (धार्मिक, आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक) में होता हुआ दिखाई देता है। भारत में आए हुए अंग्रेजो ने १८०० कामे ही स्थापना की और भारतीय की उन्नति में महत्वपूर्ण सराहनीय योगदान दिया । जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य और भाषा को नया रूप मिला। उनके द्वारा प्रेस खोले गये साथ ही पर पत्रिकाओं का प्रचुर मात्रा में विकास हुआ । देश भर में 'बुक सोसाइटियाँ', स्कूल, काले तथा विश्वविद्यालयों की स्थापनाएं की गई और शिक्षा का सामान्य जनता में प्रचार प्रसार किया गया। उनकी मदद से ही विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं की भी स्थापना की गई, जो पाश्चात्य शैली के आधार पर कार्य करके भारतीय साहित्य में कान्ति पैदा कर दी सन् १८४८ ई० में 'गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी' की स्थापना अ विद्वान फावंस की सहायता से की गई थी और वही आज 'गुजरात विद्या सभा' के नाम से जानी-पहचानी जाती है। काशी स्थित 'नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन" जैसी संस्थाएँ भी पाश्चात्य पद्धति पर कार्य करने वाली संस्थाओं में से प्रमुख हैं। गुजराती में इस परिवर्तन का नेतृत्व करने वालों में मुख्य रूप से दुर्गाराम मेहता (१८०६-१८७८) और दलपतराम (१८२० १८६८) का नाम उल्लेखनीय है। ये महारथी सामाजिक सुधार की दिशा में अग्रसारित हुए। सन् १८४८ में सामाजिक सुधार का श्रीगणेश 'गुजराती वर्नाकुलर सोसाईटी' की स्थापना के साथ हो चुका था। तत्पश्चात् सन् १८५१ में 'बुद्धिवर्धक सभा' की स्थापना हुई। इसके साथ ही सन् १८५८ में हो वचन माला' के प्रकाशन द्वारा इस कार्य क्षेत्र को गतिशीलता प्रदान की गई। गुजरात में सामाजिक तथा धार्मिक परिवर्तन की शुरुआत हो चुकी थी जिसके

परिणामस्वरूप नवीन विचारों का प्रादुर्भाव हुआ। इस सन्दर्भ में नमंद विशेष उल्लेख

नीय हो जाते हैं। कम्पनी के राज में भारतवासियों की दयनीय स्थिति हो गई थी। अंग्रेजों द्वारा भारत का धन विदेश चला जा रहा था, मँहगाई, अकाल की टैक्स के बढ़ने से देश की हालत जा रही थी। धार्मिक दृष्टि से देखें तो अंधविश्वासमत-मतान्तर और रूढ़ियों से लोग जकड़े हुए थे। हमारे समाज में जाति-पांति, छुआ-छूत लाव, बाल-विवाह,

बहू-विवाह, विधवा-विवाह विरोध, स्त्री-शिक्षा विरोध तथा विदेश रियो हमारे समाज के दिखाई हैटि देखते है तो को सामने मा] जाती है। यह निविवाद सत्य है कि भोर में जब अवस्था अत्याचार अधिक बढ़ जाता है तो उसे दूर करने के लिए कोई-न-कोई सन्त, महात्मा साहित्यकार जन्म लेता ही है। इसीलिए गीता में

'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्

धर्मं संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

एक नये धर्म, नये समाज को स्थापना करने की बात है, जो किसी रूढ़ि, कुरिवाजों स्तन हो। ऐसे जागरूक साहित्यकारों में वाल्टेयर, मो, गोर्की, टॉलस्टॉय, हिन्दी कर ली, बंकिम चन्द्र, चिपलूणकर, भारतेन्दु तथा नर्मद आदि का नाम सहजता में लिया जा सकता है। इन्होंने न सिर्फ अपने युग का प्रतिनिधित्व किया बल्कि नवयुग का निर्माण भी किया। कलेज चार से हता का

सन् १८५७ की क्रान्ति के समय भारत के शासन की बागडोर कम्पनी सरकार के हाथ से छूटकर महारानी विक्टोरिया के हाथ में चली जाती है। पूर्व सरकार से त्रस्त भारतीयों ने नई सरकार के आगमन से किंचित राहत की साँस ली और यह सोचने लगे कि यह सरकार तो जरूर हमारे ऊपर ध्यान देगी। उनका यह विश्वास तक और द्दढ़ हो जाता है जब महारानी विक्टोरिया ने अपना घोषणा-पत्र सुनाया, जिसमे उन्होंने भारतीयों के बलपूर्वक ईसाई बनाने पर आपत्ति प्रकट की घोषणा-पत्र में कहा गया कि कानून का आश्रय सबको समान रूप से मिलेगा। कानून की द्दष्टि में सभी समान होंगे, देश को अग्रसारित करने में और लोगों के कल्याण हेतु कार्य कार्य किए जायेंगे। "रानी ने घोषणा की थी कि इंग्लैंड की जनता के प्रति उनका जो दायित्व है वही मार तीय जनता के प्रति भी होगा। इन वचनों और घोषणाओं के कारण भारतीय जन जीवन की आशाएं और आकाक्षाएं बड़ी हुई थी। पढ़ी-लिखी नई पीढ़ी को ब्रिटेन के अफसरों की न्यायप्रियता पर विश्वास था भारत के शिक्षित नई पीढ़ी की इस बात पर श्रद्धा थी कि जब हम राज-कारोबार करने में सक्षम होंगे तब हमारी अनेक मांगे पूरी होंगी।" इस प्रकार की घोषणा से भारतवासियों में बहाली का होना स्वाभाविक मी था। जहाँ एक ओर कम्पनी सरकार सत्ता के बल से धर्मत्परिवर्तन करवा रही थी, देश का आर्थिक शोषण कर रही थी, भारतीय उद्योग-धन्धों को तबाह कर दे रही थी, जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय कारीगर बेकार, बेरोजगार हो गये थे, मुझे भू पर रहे थे, हर तरह से जनता व देश का शोषण हो रहा था - ऐसे में देश की समृद्धि लोगों के समान

म्याय की बात करने वाली टोरिया भारतवासियों की देवी बन बैठी। सभी देशवासियों ने 'विक्टोरिया' का स्वागत किया। तभी तो गुजराती कवि दलपतराम ने कहा-'हरख हवे तु हिन्दुस्तान' '(हर्षित हो अब हिन्दुस्तान) ।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्द्र ने अंग्रेजी राज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते "हर लिखा कि 'हम लोगों को चाहिए कि सबके सब एक स्वर होकर अंग्रेज बहादुर गुणानुवाद करें कि जिसकी शिक्षा से हमको साहस मिला और अपने देश की प्राचीन कुरीतियों का त्याग करने में श्रम करते हैं।" भारतेन्दु-युगीन साहित्य की राजमति पर प्रकाश डालते हुए डॉ० राम विलास शर्मा ने लिखा है कि सन् १६५७६० विद्रोह के बाद जब भारत का राज्य 'कम्पनी बहादुर' के हाथ से महारानी सिटोरिया के हाथ में का गया तो बहुत लोग समझे कि उस शासन परम्परा का जिसे जान ने 'एहंड ईयर्स नाव क्राइम' कहा था- अब अन्त हो गया। महारानी के लिए पोषणा-पत्र पहले तैयार किया गया था, उसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया और उस अधिक सहृदयतापूर्ण घोषणा-पत्र तैयार कराया। उसमें भारतवासियों को मधुर-मधुर आश्वासन दिये गये और डलहोजी आदि की नीति को देखते हुए उस समय लोगों को वे आश्वासन और भी मधुर लगे होंगे इसमें सन्देह नहीं। विद्रोह के पहले अंग्रेज जिस प्रकार छोटे-छोटे राज्य हड़प चुके थे और विद्रोह में तथा उसके पश्चात् उन्होंने अपना जो बप्रिय रूप दिखाया था, उसकी याद कर, उनका हृदय गद्गद् हो गया। कवियों के कंठ से प्रशस्तियाँ फूट पड़ी और प्रजा ने अपने आपको महारानी विक्टोरिया को अ नतर में समझकर सुख की साँस ली और अपना भाग्य सराहा ।"

ब्रिटिश राज के आगमन से जनता में हर्षोल्लास छाया हुआ था। सभी विक्टोरिया रानी के स्वागतार्थं निकल पड़े थे भारतेन्दु ने इसे बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए लिखा

'ब्रिटिश राज-चिह्न सजी नगरन-अटा बटारि

धुजा पताका फरहहि सहसन भाज सवारि ।।" भारतेन्दु जी मागे लिखते हैं

'जे जे जे विजयिनी जयति भारत महारानी जे राजामन-मुकुट-मनी धन बल-गुनखानी ।।"

महारानी विक्टोरिया के तेज का वर्णन करते हुए भारतेन्दु लिखते हैं 'जाकी कृपा-कटाक्ष चहत सिगरे राजागन जा पद भारत-भुवन सठत हवे वस कंपित मन ॥"

भारतीय राजा-महाराजा किस तरह से रानी विक्टोरिया के पीछे दौड़ रहे थे, उसका भी बड़ा सुन्दर चित्रण भारतेन्दु ने किया है गले बांध इस्टार सब जड़ित हीर मनि कोर धाबहू घाव दोरि के कलकत्ता की जोर ।। N राम भेंट सबहीं करो महो नमीर नवाब हाजिर हवे शुक-झुकि करो सबै सलाम अथाब ।। * भारतेन्दु की इन पंक्तियों में उनकी राजभक्ति

स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

सन् १८०१ में श्रीमान प्रिंस आफ वेल्स के ज्वर से पीड़ित हो जाने पर उनके स्वस्थ होने के लिए भगवान से अभय वरदान माँगते हुए भारतेन्दु ने कविता लिखी। जिसमें उनको राजभक्ति दिखाई देती है।

भारतेन्दु महारानी के चिरंजीवी होने के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं प्रभु छदयात महारानी बहू दिन लिए प्रजासुखदानी ॥"

भारतेन्दु को ही भांति गुजराती कवि नमंद भी रानी के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए लिखते हैं-

'देश म आनन्द भयो, जय जय विक्टोरिया ।" (देश में खुशहाली आयो। जय जय विक्टोरिया)

१ नम्बर सन् १८२८ में महारानी विक्टोरिया के राज की स्थापना के शुभ अवसर पर बुश होकर नर्मद ने लिखा 'ब्रह्म दयाची आज, अवसर रुडो आवियो, रहेशे सहनी बाज, भयं राज शुभ राजीनं 110

(ईश्वर कृपा से आज अवसर सुन्दर आया, बचेगी सबकी लाज हुआ राज शुभ रानी का ।') विक्टोरिया के पति आस्वर्ट की मृत्यु पर नर्मद ने रानी को शोक-संदेश भेजा कुँवर के विवाह के शुभ अवसर पर विवाहित गीत भी लिखा। नर्मद ने ब्रिटिश राज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा 'अंग्रेज जहाँ राज छे, जुलमना देखाय, उद्यम ठामोठाम बहु घरणी वम धम धाय अनेक धनवंता गरीब, समन्याये तोलाय, बैंक ने बकरी ने जहाँ, पास-पास जोवाय पण घन बहेमा करें, विद्यानीतिनु मान, शंक नेन राय ठरे, परस्पर सूखतान ॥2

(अंग्रेज का जहाँ राज है, जुलम नहीं है वहाँ उद्यम चारों ओर बहुत, धरती है खुशहाल वहाँ बहुतेरे धनवान गरीब, समन्याये तोले जायें, बाय-बकरी दोनों पास-पास देखे जायें।

बहुत धन बंटता फिरे, विद्यानीति का हो मान राजा रंक दोनों रहें, परस्पर सुचतान ॥')

यही नहीं विदेशी सरकार के प्रति अपनी निश्चल राजभक्ति भी इन कवियों दिखायी है। किन्तु कुछ समय उपरांत यह देखा गया कि देश का आधिक बोझ बढ़ा ही जा रहा है, बकाल में सरकार की भोर से कोई सहायता नहीं मिल रही है ऊपर से टैक्स बोर बढ़ा दिया गया। सन् १६५७ में प्रिंस आफ वेल्स के भारत आने पर काफी धन बरबाद किया गया। यह सब देखकर भारतीयों की बौद्धिक चेतना पर लगा। जिसके फलस्वरूप उनकी राजभक्ति राष्ट्रभक्ति में बदलने लगी। भारतेन्दु जहाँ एक ओर 'मंजस्योष" लिखकर अंग्रेजों की प्रशंसा 2

करते हैं वहीं दूसरी ओर उसी स्पोत्र में उनकी कमियों, बुराइयों को भी उदाटित करने से नहीं चूकते। वे एक ओर खते है कि हे अंग्रेज तुम नाना गुणवत सुन्दरकांति विशिष्ट, बहुत सम्पदा युक्त हो, यहीं दूसरी ओर यह भी कहते हैं कि 'तुम

नृसिंह हो, क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनों पन तुममें है, टैक्स तुम्हारा क्रोध है और तुम परम-विचित्र हो, तुम वामन हो क्योंकि तुम वामन व चतुर हो, तुम परशुराम हो, क्योंकि पृथ्वी निशाणी कर दी है। यहाँ अंग्रेजों को वामन कहकर उनकी उस प की ओर संकेत किया है, और नक्षत्र शब्द प्रयोग से यह कहना चाहते है कि तुमने भारतीयों को पुरुषत्व विहीन कर दिया है। भारतेन्दु अंग्रेजों को राम, बलराम तथा बुद्ध की उपमा देते हुए लिखते हैं कि 'तुम राम हो क्योंकि अनेक सेतु बाँधे है, तुम बलराम हो क्योंकि मद्यप्रिय और हलधारी हो, तुम बुद्ध हो क्योंकि वेद के विरुद्ध हो। और तुम कल्कि हो क्योंकि शत्रु संहारकारी हो, अतएव, हे दर्शावधि रूप धार हम तुमको नमस्कार करते हैं। भारतेन्दु यहाँ खूलकर अंग्रेजों की बुराई न करके उनकी स्तुति करते हैं और उसी में ही वे अपनी बात कह जाते है जिससे उनकी राष्ट्रभक्ति की स्पष्ट झलक दिखाई देती हैं।

भारत वीरत्व' कविता में भारतेन्दु की राष्ट्रभक्ति को देखा जा सकता है। 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति नामक नाटक, खासतौर से हिन्दू कट्टरवादिता और कर्मकाण्ड में पशुबलि की प्रधानता को नजरन्दाज करते हुए धार्मिक सुधार आन्दोलनों से प्रभावित होकर लिखा। सन् १८८१ में 'अंधेर नगरी' में वे अंग्रेजों के साम्राज्यवादी उपनिवेववाद का खुलकर विरोध करते हैं। उनकी राष्ट्रभक्ति सन् १८८४ में बलिया के भाषण 'भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है' में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है 'विजयिनी विजय वैजयन्ती' में वे भारत भूमि के दुःख का वर्णन करते हैं, यह भूमि अब सब तरह से दुखी हो गई है। अब यह भूमि बीरों से रहित हो गई है। जिस भारत में सिंह की गर्जना होती थी उसी में आज सियार, स्वान आदि दिखाई देते हैं। द्रष्टव्य हैं कुछ पंक्तियाँ

'हाय बड़े भारत भूव भारी । सब विधि भई दुबारी ॥
होत सिंह को नाद जोन भारत बन माहीं ।
जब सियार स्वान पर आदि तखाहीं ॥....
धन विद्या बल मान वीरता कोरति छाई।
रही जहाँ तिल केवल अब दीनता नखाई ।। "

अंग्रेजों की शोषण नीति की झलक भारतेन्दु के 'नये जमाने की मुकरी' में दिखाई देशी बैं

भीतर-भीतर सब रस चूसे ।
हंसि हंसि के तन मन धन मूर्त
जाहिर बातन में अति तेज

क्यों सखि सज्जन नहि अंग्रेज '114 भारतेन्दु की तरह नर्मद भी जहाँ एक ओर महारानी की प्रशंसा करते हुए दिखाई देते हैं उन्हें 'कसरे हिन्द' बनाते हैं वहीं दूसरी ओर 'इल्बर्ट बिल सम्बन्धी' कविता में न 'खामोशी' और 'चेतावनी' के शब्द भी सुनाते हैं। इस कविता में उन्होंने राजभक्ति की न अपेक्षा राष्ट्रभक्ति को अधिक महत्व दिया है। वे लिखते हैं--:

"भूव तरसनी ताण, प्रजा धीरजधी बम, भेद भजवतो न्याय, हृदयने क्रोधे धमशे

पूर्वोक्त पंक्तियों में नर्मद ने कहा कि भूख और प्यास के दौरे तो जनता धीरज से सह लेगी परन्तु न्याय करने में बरता गया भेदभाव व्यक्ति को क्रोध से भर देगा। नमंद यहाँ खुलकर यह कहना चाहते हैं कि भारतीयों के साथ बरते गए अन्याय को के (भारतीय) कभी सहन नहीं करेंगे। आगे उन्होंने कहा

'पक्ष न्यायथी, बंड बुडगां बहु म धर्म अर्थनी हानि जोई जन उपाय रचशे ।'

अर्थात् इस पक्षपातपूर्ण न्याय के परिणामस्वरूप देश में दंगे बहुत होंगे, धर्म और अकी हानि होते हुए देखकर लोग इसका कोई-न-कोई उपाय अवश्य ढूंढ निकालेंगे । इतना ही नहीं

'जयो जीतबो भेदथी गोरों कालो,
हवे राखशो केम, समयने जोई चालो ?'15

नर्मद गोरे और काले का भेद भी मिटा देना चाहते हैं, इसीलिए उन्होंने कह कि 'अजेता' और 'विजेता' का भेद और गोरा-काला का भेद अब हम कैसे रखेंगे अब समय को देखकर चलो । इसमें नर्मद की विश्व बन्धुत्व की अनुगूंज सुनाई देती है।

नर्मदा के हृदय में पराधीन देश को स्वाधीन बनाने की आग सुलग रही थी, ऐसी स्थिति में उनके द्वारा राजभक्ति के गीत का लिखा जाना सम्भव नहीं था, किन्तु कम्पनी सरकार के जुल्म से भारतीय त्रस्त हो चुके थे, उसी दौरान ब्रिटिश सरकार का आगमन हुआ और विक्टोरिया के घोषणा-पत्र से भारतीयों ने राहत की सांस ली। उस दौरान देश भर में विक्टोरिया रानी की जय जयकार हुई। विक्टोरिया की घोषणा ने तो सारे देश के लोगों में एक आशा की किरण का संचार किया, किन्तु धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार ने गिरगिट की तरह रंग बदलना शुरू किया। जैसा कि डॉ० मुदगल ने लिखा है कि 'भारत से जन्म लेने वाले किसी भी नागरिक को जाति, वर्ण अथवा पेशे के कारण कम्पनी के अंमल की कोई भी नौकरी अस्वीकार नहीं की जाएगी। शिक्षा की दृष्टि से जिसकी योग्यता हो वह कोई भी बड़ा अधिकारी बन सकता है।' इस प्रकार का वचन सन् १८३३ 'चार्टर एक्ट' में दिया गया था। इम वचन पर सन् १८५८ की रानी घोषणा और सन् १८६१ के 'नागरिक सेवा अधिनियम' में जोर दिया गया था। फा०-१०

लेकिन अंग्रेज सरकार की नीति बराबर इसके विरोधी रही। 'नागरिक सेवा' में वासियों को प्रधानता तो मिलती ही नहीं थी बल्कि जानबूझकर उन्हें ठुकराया जाता भारत था। अंग्रेजों की इस नीति के कारण उन पर होने वाला विश्वास टूटने लगा उनके प्रति बुरी भावना फँसने लगी और भारतीय शिक्षित पीढ़ी के हृदय में असन्तोष की आग बढ़ने लगी। तब भारतीय राष्ट्रभक्तों ने उन्हें सचेत भी किया। गुजरात की 10 जनता की राष्ट्रभक्ति का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए डॉ० रमेश शुक्ल ने लिखा है। कि- १८५७ में जब समग्र उत्तर भारत में क्रान्ति की ज्वाला उठी हुई थी तब गुजरात में राजपीपला के संयत मुरादअली, सूनावाड़ा के सूरजमल, रोहा के ठाकुर, इंटर अगदेली के ठाकुर तथा आनंद के मुखी गरबड़दास ने अंग्रेजों के सामने हथियार उठा लिए थे। 37 सन् १८५७ की क्रान्ति के सन्दर्भ में लिखी गई नर्मद की 'हिन्दुओनी पड़ी' कविता में उनकी राष्ट्रभक्ति उपर कर सामने आती है। यथा

'राजवंश ते बरो, बरो छटपटियो न्हानो, गुल रहीने कर्या, जीव सटोसन कामो ।

मन ते बची बहु दुष्ट बायो

डुं न मानूं बात, घणे देशे देखायो ।

रण जोड़ो प्रख्यात सातिया टोपे, टेडो, गंभराव्या अंग्रेज, एबोनोनो केटो ।

बलिहारी छे गाऊँ, झांसीनो रानी तूने,

कर्तुं पराक्रम बोर, तूंषि के जस हिन्दुने । '३" वास्तव में उस राजवंश में नाना साहब पेशवा बड़े दक्ष थे। जिन्होंने गुप्तवास में रड़कर जान की बाजी लगाकर बड़े साहस का कार्य किया। कुछ लोगों के अनुसार नाना साहब रणबांकुरे नहीं थे और कुछ लोग तो उन्हें दुष्ट मानते थे लेकिन मैं इस बात को नहीं मानता। नाना साहब अनेक भेष धारण करके अनेक रूपों में सामने आए। वालिया टोपे सुविख्यात सुप्रसिद्ध योद्धा थे। अंग्रेज सेनाओं के पीछे से उन पर हमला कर उन्होंने अंग्रेजों को डरा दिया। हे झांसी की रानी मैं तुम पर बलिहारी जाता हूँ। तुमने बड़ा पराक्रम करके वीरता दिखाई थी। तुम्हारे ही कारण हिन्दुओं (भारतीयों) को यश प्राप्त हुआ।

'हिन्दु' काव्य में अहाँ एक ओर देश के पतन का विस्तृत करते हैं वहीं अतीत का सुन्दर चित्र भी उपस्थित करते हैं

'हिन्दु देशना हाल, पया छे मूंडा आजे, सत्ता मोटी बोर्ड, नीचुं ते जोए लाजे ।

(हिन्द देश का हाल बहुत बुरा है बाज विशाल सत्ता बोए, शुके लाज शर्म से आज ।)

वर्षात्–

इतना ही नहीं 'सूरत शहर की दशा देखते हुए नर्मद ने कहा

'बातो तुज हाल, सूरत सुनानी पुरत

या पूरा बेहाल, सुरत तुज रखती सूरत ।"

(यह क्या तेरी हाल, सूरत सोने की मूरत, हुई पूरी बेहाल, सूरत तेरी रोती सूरत ।)

नमंद की राष्ट्रभक्ति तो तब और अधिक स्पष्ट होती है जब वे 'नर्म कोश' सम

पित करने के लिए एक पत्र में लिखते हैं- 'मैं यह चाहता हूँ कि जब तक हिन्दू की (भारतीय) मिले तब तक अंग्रेजों को समर्पित न किया जाय।' इससे उनकी राष्ट्र भावना और हिन्दुस्तानियों के प्रति प्रेम की झलक दिखाई देती है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि वे अंग्रेजों को इस देश की जनता के रूप में नहीं मानते हैं। इसका कारण भी स्पष्ट है कि अंग्रेज भी स्वयं को इस देश का नागरिक नहीं मानते। वे यहाँ मात्र राज करने आए है। जिस प्रकार मुगल यहाँ आए और देश को स्वदेश मानकर यहाँ रहे उसी प्रकार यदि अंग्रेज इस देश को स्वदेश मानें तो उनके शासन के प्रति नर्मद को कोई विरोध नहीं है

नमंद को यह विश्वास था कि कमाने के लिए आए हुए अंग्रेज हमारे शुभेच्छुक है। अभी हम राज चलाने योग्य नहीं है और जब योग्य हो जाएंगे तो हमारा राज हमें वापस दे देंगे। उनमें इतना साहस भी था कि यदि अंग्रेज बनालोभ में आकर राज हड़ पना चाहेंगे, तो उनका मुकाबला करके राज वापस ले लेंगे। इस बात को रेखांकित करते हुए नमंद लिखते हैं

कहे तो एज, परदेशी देशी बदले, कारभारी पई हाल, राज देशीनुं चलवे । नयी हरामी तेह, आखरे रडावणे के, सह समझे छे तेह, आपणो हक दई देशे ऐम करता कदी, लोभ माँ हक नहि देशे,

सामा पशुं तोय, खोटं ईश्वर नहि कहेशे । अर्थात् सच कहूँ तो यह कि इस देश का शासक चाहे देशी हो या परदेशी, आज काम चलाऊँ शासक बनकर इस देश का राज चलाएँ। वे (अंग्रेज) इतने हरामी नहीं है कि हमारा राज हड़प कर हमें हलाऐंगे। इस बात को सब जानते हैं कि वे हमारा हक (अधिकार) दे देंगे। यदि लोभ में आकर वे हमारा अधिकार नहीं देंगे तो हम अपने अधिकार के लिए उनसे लड़ेंगे। ईश्वर कभी अन्याय नहीं होने देगा ।

कवि नमंद की निडरता तो तब और अधिक स्पष्ट हो जाती है जब वे किसी एक प्रसंग में कहते हैं कि-'ल्यूथर ने तो कहा था कि घर पर जितनी नरिया है यदि मेरे उतने दुश्मन होंगे तो भी मैं अपने मत को छोड़ने वाला नहीं हूँ। किन्तु मैं तो कहता हूँ कि उन नरियों के टूटने से छोटे-छोटे जितने टुकड़े होते हैं यदि मेरे उतने दुश्मन होंगे तो भी मैं महाराज की

परवाह नहीं करने वाला हूँ।" और यही कारण है कि वे अंग्रेजों की परवाह नहीं करते। इतना ही नहीं 'या होम' करके युद्ध के मैदान में कूद जाने की बातें करते हैं। उन्होंने 'था होम करीने पडो' कविता में लिखा है

'चलो चलो मुं बार लपाड़ो, चलो निडर रण मां, घसी पढ़ो शत्रु पर नहितर मेरी जशी क्षण मी "

इसका आशय यह है कि 'युद्ध में निडर होकर चलो, देर क्यों लगा रहे हो। पड़ो दुश्मनों पर, नहीं तो क्षण भर में मारे जाओगे। युद्ध के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं है।' तमंद मात्र लोगों को ही युद्ध में नहीं भेज रहे है ये स्वयं युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं-

हाँ भैया हूँ तो आचायों, शंखानद हनु याये हो।' अर्थात् हे भाई! मैं तो ए चला, युद्ध का शंखनाद अभी हो रहा है। अपने साथ ही वे देशभक्तों का भी आह्वान करते हैं। नमंद को अपनी शक्ति और साहस पर पूरा भरोसा था तभी तो उन्होंने कहा

'सह चलो जीतवा जंग ब्युगलो वांगे,

या होम करीने पड़ो फतेह छे आगे।' 'युद्ध का विगुल बज रहा है, सभी मिलकर जंग जीतने के लिए बलो, और युद के मैदान में 'या होम' करके कूद पड़ो आगे सब फते है ।

भारतेन्दु और नर्मद हिन्दी तथा गुजराती के युग-पर्वर्तक साहित्यकार के रूप में माने जाते हैं, दोनों का युग लगभग एक ही रहा है तथा इन्होंने अपने-अपने साहित्यिक क्षेत्र में अद्वितीय लोकप्रियता हासिल की है। इन दोनों रचनाकारों ने अंग्रेजों की प्रशंसा की इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन प्रशंसात्मक कविताओं के आधार उन्हें राजभक्त नहीं सिद्ध किया जा सकता। पूर्व सरकार से त्रस्त होने के कारण, विक्टोरिया सरकार से राहत पाने पर ऐसी कविताओं का लिखा जाना स्वाभाविक ही था। यह उनका भोवो च्छन मात्र था, इससे उनकी राष्ट्रभक्ति को शंका की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। इसके भी प्रमाण उनकी रचनाओं में ही उपलब्ध हैं। भारत की दुर्दशा देखकर, इसे लुटता हुआ देखकर दोनों कवि दुःख का अनुभव करते हैं। जहाँ भारतेन्दु ने लिखा

'रोअह सब मिलि के आवहु भारत भाई । हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई ।'

वहीं नर्मद ने भी कहा

हिन्दु देशना हाल, घया छे मूंडा आजे, सत्ता मोटी खोई, नीचं ते जोए लाजे।" (हिन्द देश का हाल, बहुत बुरा है आज,.

1 विशाल सत्ता खोए, मुके शर्म से आज ।) भारतेन्दु भाषा के द्वारा देशोन्नति की बात करते हैं, यथा- 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा ज्ञान के कटे न हि को शूल ।।'

उन्होंने किसी भाषा विशेष की ओर संकेत नहीं किया अपितु हरेक प्रान्तीय बाबाओं की बात की है। निज भाषा की उन्नति से ही देश की उन्नति होगी। भारतेन्दु पहले अंग्रेजों का प्रशस्तिवान करते हैं और उन पर राजभक्ति का लेप करते हैं और फिर उसी पर चोट करते है, जो अधिक गहरी होती है। युव

बंडे राज सुख मात्र सबै भारी। विदेश जात अतिवारी '

भारतेन्दु की इस नीति को अपनाकर सीधे-सीधे बंधे पर बोट करते हैं। उन पर धावा बोलते है। जोशीले कवि के रूप में हमारे सामने जाते हैं। यहाँ भारतेन्दु और नर्मदमें बड़े-छोटे या किसकी भक्तिराष्ट्रभक्ति है या कम है की बात नहीं है। वह दौर ही एक ऐसा दौर था जब भारतेन्दु और नर्मद जैसे कवि रचनाकार हरेक में, प्रत्येक भाषा-साहित्य में जन्म ले रहे थे, भले ही उन लोगों ने जगाती शेर में बंधकों को प्रशंसा को हो किन्तु उनको (जों को असलियत का प हो सबने अपने राष्ट्र को बचाने को दिन में शिौल हुए है। राष्ट्र प्रति अपने का निर्वाह सभी ने किया है। जब भी उसी राष्ट्र भक्ति की महतो है।

***व्याख्याता**
व्याकरण
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय
अलवर (राज.)

संदर्भ

1. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास शंकर व २३
2. 'परा' भारतेन्दु हरिश्चन्द 'कवि वचन सुधा २. भारतेन्दु गुगरामविलास शर्मा २-३
3. भारतेन्दु प्रन्यावली २०७०१
4. वही, पृ. ७०२
5. बी. १०७० ७. वही, पृ०
6. वही, ६२५
7. नर्म कविता, पृ०
8. बही, पृ०७६६
9. भारतेन्दु बन्यानो खण्ड ३,०८५४८१
10. भारतेन्दु ग्रन्थावली-२००६-०

11. वही, पृ० ११
12. नर्म कविता-२०११
13. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास शंकर व मुदगल, २०
14. ननंद एक समालोचना-डॉ. रमेश म. ०२१६
15. मन कविता खण्ड २, 'हिन्दुओनी पढ़ी',
16. नर्म कविता, पृ० ३२५
17. वही, पृ० ३६४
18. वही, पृ० ३६४
19. समाज सुधारा रेखा दर्शन नवलराम त्रिवेदी ०४४
20. नर्म कविता - नर्मद नुं मन्दिर